शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

महाकवि कालिदास के शैक्षिक विचारों का विवेचनात्मक मूल्यांकन

डॉ0 गीता शर्मा
एस0एम0 कॉलेज, चन्दौसी, जनपद–सम्भल

सारांश

इस अध्ययन में महाकवि कालिदास के दार्शिनिक विचार एवं उनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में विद्यमान समस्याओं के सामाधान की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। यह विचार वर्तमान भारतीय एवं राष्ट्रीय शिक्षाप्रणाली के सुधार का मार्ग प्रशस्त करते हैं और वर्तमान शिक्षाप्रणाली का उद्देश्य विधि, पाठ्यक्रम, गुरु–शिष्य सम्बन्ध एवं शिक्षण संस्थानों का स्वरुप मूल्यों पर आधारित कर मानव के सर्वांगीण विकास पर बल देना है। ये सर्वमान्य जीवनमूल्य शिक्षा और उसके समस्त पक्षों के लिए मुख्य आधार माने जायें और शिक्षा का प्रत्येक पक्ष उन मुल्यों पर आधारित हो। मूल्य शिक्षा मात्र सच्ची शिक्षा ही नहीं अपितू शिक्षा के भारतीयकरण का एक मात्र साधन है।

महाकवि कालिदास के मूल शब्द या कृतियाँ –

(1) रघुवंश (2) कुमारसम्भव (3) मालविकाग्नि मित्र (4) विक्रमोर्वशीय (5) अभिज्ञानशाकुन्तलम (6) ऋतुसंहार (7) मेघदूत हैं।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ0 गीता शर्मा,
“महाकवि कालिदास के शैक्षिक विचारों का विवेचनात्मक मूल्यांकन”
शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 37–43
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No.7 (SM 445)

महाकवि कालिदास के शैक्षिक विचारों का विवेचनात्मक मूल्यांकन

डॉ0 गीता शर्मा

प्रस्तावनाः–

प्राचीन शिक्षा पद्धति के स्वरूप और इतिहास को जानना शिक्षाविदों एवं शिक्षा शास्त्रियों के लिए अति आवश्यक है। यह ज्ञानवर्धक एवं रोचक भी है। राष्ट्र की प्रगति का आदर्श शिक्षा–संस्थाओं में प्रतिबिम्बित्त होता है। शिक्षा पद्धति राष्ट्र के नागरिकों के बौद्धिक निर्माण का कार्य सम्पन्न करती है। भारत देश में शिक्षा पद्धति का इतिहास वैदिक युग से माना जाता है। बौद्धकाल के प्रारम्भ होने से पूर्व वाले सम्पूर्ण काल–खण्ड को वैदिक काल की संज्ञा दी जाती है। भारत में शिक्षा पद्धति का इतिहास वैदिक युग से वर्तमान युग तक अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होता रहा है। यद्धपि वैदिक रूप की शिक्षा पद्धति से वर्तमान युग की शिक्षा–पद्धति में अनेक मूलभूत विशेषताएँ उत्पन्न हो चुकी है, तथापि हमारा कर्त्तव्य है कि अपनी प्राचीन भारतीय शिक्षा–पद्धति का सम्यक् अवलोकन करें।

मार्गदर्शक सिद्धान्त

प्रस्तुत अध्ययन का, उद्‌देश्य एवं विधि इस मार्गदर्शक सिद्धान्त पर आधारित है कि ''दर्शन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पक्ष हैं जिनमें से दर्शन सिक्के का विचारात्मक पक्ष है और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष। दर्शन और शिक्षा के इसी स्वाभाविक सम्बन्ध के कारण प्रत्येक व्यक्ति युगपद् दार्शनिक भी होता है और शिक्षक भी। किसी भी विचारक की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ उसके जीवनदर्शन अर्थात् उसके सत्तामीमांसात्मक, जीवमीमांसात्मक सृष्टिमीमांसात्मक, ज्ञानमीमांसात्मक विचारों का निर्धारण करती है और, फिर, उसके दार्शनिक विचार उसके शिक्षादर्शन अर्थात् शिक्षा की प्रकृति, कार्य उद्‌देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि, गुरूशिष्यसम्बन्ध आदि से सम्बन्धित उसके विचारों को एक निश्चित रूप प्रदान करते हैं।''

अध्ययन के उद्‌देश्यः–

1. कालिदास के व्यक्तित्व एवं कषतित्व का परिचय देना।
2. कालिदास के दार्शनिक विचारों का चयन, वर्गीकरण एवं विवेचन करना।
3. कालिदास के शैक्षिक विचारों का चयन, वर्गीकरण एवं विवेचन करना।
4. भारतीय शिक्षा की विद्यमान समस्याओं के समाधान और भारत में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास हेतु कुछ व्यावहारिक सुझाव देना।

अध्ययन की विधिः–

हमारे सभी साहित्यकार उन्हीं शिक्षण विधियों को मान्यता देते है जिनका विकास वैदिक काल के गुरूकुलों में हुआ था। उन्हीं शिक्षण विधियों का प्रयोग महाकवि कालिदास के ग्रन्थों में पाया जाता है। प्राचीन शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित हैं–

1. प्रवचन विधि या व्याख्यान विधि
2. सम्बाद विधि
3. उद्धरण विधि

4. दृष्टान्त विधि

दार्शनिक पक्षः–

1. सत्ता मीमांसात्मक की दृष्टि से महाकवि कालिदास एक विशुद्ध दार्शनिक है। वह इस सृष्टि का निर्माण ईश्वर द्वारा मानते है। उन्होनें ईश्वर के गुण एवं कर्मो को मानव के लिए प्रेरक माना है। उनकी मान्यता है कि ईश्वर पहले सृष्टि का निर्माण करता है फिर उसका पालन पोषण करता है और अन्त में उसका संहार करता है। ये तीनों रूप भगवान शिव के बताये गये है।

2. जीव मीमांसा (मानव मीमांसा) की दृष्टि से महाकवि कालिदास के ग्रन्थ मूल्यों के महासागर है। धर्म एवं मूल्यों के सिद्धान्त एवं कर्म तथा समाज के धर्म की दृष्टि से मानव की तीन विशेषता विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं– (1) आदर्श मानव के गुण (2) आदर्श मानव के कर्म (3) समाज सम्बन्धी धर्म एवं मूल्य। मानव के गुणो में महाकवि कालिदास ने मानव के अनेक गुण समाहित किये हैं यथा, त्याग, सत्य, यश, धर्म, प्रखर बुद्धि, ज्ञानशक्ति, विनम्रता, वीरता, रूप, बल, सौन्दर्य, उदारता गुणों से युक्त मानव का वर्णन किया है।

3. सृष्टि मीमांसा की दृष्टि से महाकवि कालिदास प्रकृति के मनोरम चित्रकार एवं उपमा के सम्राट हैं। वह सृष्टि में प्रकृति के मानवी व्यवहार के प्रतिपादक हैं। उनके ग्रन्थों में प्राकृतिक सौन्दर्य के बड़े सुकुमार चित्र मिलते हैं। महाकवि कालिदास प्रकृति को सजीव तथा मानवीय भावनाओं से ओतपोत (परिपूर्ण) मानते हैं, उनकी मान्यता है कि मानव के समान प्रकृति भी सुख–दुःख का अनुभव करती है। अतः प्रकृति में भी मानव के समान गुण एवं कर्म विद्यमान रहते है।

4. ज्ञान मीमांसा की दृष्टि से महाकवि कालिदास ज्ञान के मानवीय सिद्धान्त के प्रतिपादक है। भारतीय दर्शन में शिक्षा एवं ज्ञान को पर्यायवाची एवं समानार्थक माना जाता है। शिक्षा का विवेचन करते हुये महाकवि कालिदास की मान्यता है कि मानव के कर्म जन्म मृत्यु और सुख–दुःख से सम्बन्धित होने के कारण शिक्षा प्रद होते है। कालिदास जन्म मृत्यु के माध्यम से मानव की नश्वरता एवं संसार की क्षणभंगुरता का ज्ञान प्रदान कर मानव को दुःखी न होने की शिक्षा देते हैं।

शैक्षिक पक्षः–

(अ) शिक्षा के उद्देश्य

1. महाकवि कालिदास ने वैदिक प्रणाली के उद्देश्यों का प्रतिपादन शारीरिक विकास के आधार पर ही किया गया है। मानसिक विकास की संकल्पना में शारीरिक विकास का समावेश हो जाता है। मानसिक विकास इन्द्रियों एवं मन दोनों का नियंत्रण है। मानसिक विकास मानव जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य है। शिक्षा निग्रह एवं मनोनिग्रह की प्राप्ति का साधन है।

2. महाकवि कालिदास बौद्धिक विकास को शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य मानते है। अतः उनके बौद्धिक विकास का तात्पर्य है ''बुद्धि एवं ज्ञान का महत्व''। महाकवि कालिदास की दृष्टि

से बुद्धि एवं ज्ञान का विकास, चिन्तन मनन एवं तर्क ही बौद्धिक विकास है। बौद्धिक विकास करना ही शिक्षा साधन का सर्वोपरि उद्देश्य है।

3. महाकवि कालिदास की मान्यता है कि आध्यात्मिक विकास मानव को निम्नस्तर से उच्च स्तर तक लाकर एक आदर्श मानव बनाता है, साथ ही धर्म को सर्वोपरि मानता है। कालिदास की दृष्टि में धार्मिक क्रियाओं का विकास ही शिक्षा साधन का सर्वोपरि उद्देश्य है। आध्यात्मिक विकास के लिए शिक्षा को दो महत्वपूर्ण कार्य करने पड़ते हैं। (1) धार्मिक ज्ञान (2) धार्मिक एवं नैतिक क्रियाओं का विकास। महाकवि कालिदास के ग्रन्थों में आध्यामिक विकास के साथ–साथ धार्मिक विकास भी उल्लिखित है। यथा–ब्रह्मा, जय, तप, यज्ञ, गौ–सेवा सन्ध्योपासना, यम नियम, सत्संग आदि।

4. महाकवि कालिदास ने शिक्षा–प्रणाली के उद्देश्यों में सामाजिक विकास को भी मान्यता दी है। वर्ण व्यवस्था को सामाजिक विकास का आधार माना है प्रत्येक वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) अपना–अपना दायित्व पूरा करके समाज की सेवा करता है जो शिक्षा का सर्वोपरि उद्देश्य है। महाकवि कालिदास की दृष्टि में सामाजिक विकास के लिए वर्ण व्यवस्था के आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास) के नियमों का पालन करना शिक्षा का परम कर्त्तव्य है।

(ब) पाठ्यक्रमः–

महाकवि कालिदास के ग्रन्थों में दार्शनिक विचारों का विस्तृत विवेचन मिलता है। उनका आस्तिकवादी दर्शन शैव दर्शन के रूप में प्रकट हुआ है। जो दार्शनिक शिक्षा की दृष्टि से सर्वोपरि विषय है और पाठ्यक्रम का आधार है।

(2) आध्यात्मिक विषयों में कालिदास ने धर्म, दर्शन, नीतिशास्त्र, समाज आदि विषयों का स्पष्ट उल्लेख किया है। महाकवि कालिदास ने सामाजिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन को श्रेष्ठ माना है।

(3) महाकवि कालिदास के ग्रन्थों में अग्निहोम, यज्ञ, व्रत, तीर्थयात्रा आदि धार्मिक विषयों का विस्तृत विवेचन हुआ है, जो धार्मिक विषय के पाठ्यक्रम की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है।

(4) कालिदास के ग्रन्थों के अनुसार धार्मिक प्रथाओं का पालन, स्त्री शिक्षा, गौसेवा, अतिथि सत्कार प्रियवचन आदि विषयों को सांस्कृतिक विषय के अन्तर्गत रखा गया है, जो भारतीय संस्कृति के पाठ्यक्रम का मुख्य आधार है।

(5) कालिदास के ग्रन्थो में प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तृत विवेचन मिलता है, जो ऐतिहासिक ज्ञान मे वृद्धि के उद्देश्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण विषय है।

(स) शिक्षण विधिः–

महाकवि काालिदास परम्परागत वैदिक विधियों के उत्तराधिकारी है। कालिदास वैदिक शिक्षण की प्रवचन विधि या व्याख्यान विधि के प्रवर्तक है। इस विधि में शिक्षक एक–एक शब्द की व्याख्या के साथ श्लोक का अर्थ बताता है। व्यावहारिक रूप में सर्वप्रथम शिक्षक श्लोक का अर्थ बताता है। तत्पश्चात् श्लोक की रचना शैली, कवि का परिचय प्रसंग, सन्दर्भ तथा भावार्थ

बताता है। महाकवि कालिदास इस अध्ययन विधि के समर्थक हैं। प्रवचन विधि महाकवि कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अंक में विस्तृत एवं सुबोध रूप से वर्णित है। यह विधि मुख्य रूप से निम्न प्रकार है–

(1) संवाद विधि (2) उद्धरण विधि (3) दष्टान्त विधि

(द) गुरू शिष्य सम्बन्धः–

अत्यन्त सौहार्दपूर्ण एवं शिक्षा पद गुरू शिष्य सम्बन्ध महाकवि कालिदास की शिक्षा जगत को सर्वोत्तम देन हैं।

(i) गुरू के कर्त्तव्य एवं गुणः– (1) विषय का प्रकाण्ड पण्डित होना (2) धर्म एवं ब्रहमचर्य के नियमों का पालन करने वाला (3) स्पष्ट एवं मधुर भाषी होना चाहिये (4) शैक्षिक संस्कारों का निष्पादन करना आदि।

(ii) शिष्य के गुण एवं कर्त्तव्यः– (1) अध्ययन के प्रतिनिष्ठा और उत्साह (2) गुरू के प्रति आस्था एवं सेवा का भाव (3) अपने विषय का आवश्यक ज्ञान (4) गुरू प्रवचन को एकाग्रता पूर्वक श्रवण करना आदि।

7. शिक्षा के भारतीयकरण के लिए सुझावः–

(i) दार्शनिक पक्षः– कहने की आवश्यकता नहीं कि आज सम्पूर्ण भारत में पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति ज्ञान–विज्ञान और अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है। दूसरी ओर भारत के सभी दूरदर्शी दार्शनिक, शिक्षा विद् और राष्ट्रीय शिक्षा आयोग यह स्वीकार करते है कि जब तक भारत में इस विदेशी शिक्षा प्रणाली के स्थान पर विशुद्ध भारतीय या राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की पुनर्स्थापना न होगी तब तक भारत का सर्वांगीण विकास सम्भव न होगा। अतः हमारा सर्वप्रथम सुझाव यही है कि भारत में भारतीय संस्कृति के युग पुरूष जीवन मूल्यों पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की पुनर्स्थापना की जाये हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया जाए राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए भारतीय समाज को विघटित न किया जाय और राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक बाह्य साधनों को सहर्ष स्वीकार किया जाए।

(ii) शैक्षिक पक्षः–

(i) शिक्षा के उद्देश्यः–

1. विश्व के लगभग सभी शिक्षाविद् इस पर एकमत है कि शिक्षा एक सोद्देश्य साधन है, परन्तु उनमें इस प्रश्न पर गंभीर मतभेद है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या है? पाश्चात्य विचारकों के मतानुसार शिक्षा का अन्तिम, आधारभूत उद्देश्य आत्मानुभूति चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, ज्ञान प्राप्ति, समाजीकरण जीवकोपार्जन या मोक्ष प्राप्ति है। किन्तु ये सब उद्देश्य एकांगी होने के कारण अन्तिम या आधारभूत नहीं हो सकते। इस विषय में, वैदिक मत सर्वथा, निर्दोष, उदार और व्यापक प्रतीत होता है। वैदिक दृष्टि से, शिक्षा का अन्तिम आधारभूत उद्देश्य कालिदास के ग्रन्थों में सन्निहित है। इस आदर्श का विवेचन करके हम शिक्षा के अन्तिम आधारभूत उद्देश्य को निम्न प्रकार शब्द बद्ध कर सकते हैं।

''शिक्षा का अन्तिम आधारभूत उद्देश्य 'मानव निर्माण' अर्थात् मानव को आदर्श मानव को आदर्श पुरूष और उसके माध्यम से समाज को आदर्श समाज बनाना है। आदर्श मानव और आदर्श समाज के उद्देश्यों की सिद्धि मानव और समाज का सर्वांगीण, सन्तुलित विकास करके ही की जा सकती है।

2. व्यक्ति के सर्वांगीण, सन्तुलित विकास का तात्पर्य है, उसकी शारीरिक मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और सामाजिक क्षमताओं एवं दक्षताओं का विकास करना और समाज के सर्वांगीण, सन्तुलित विकास का तात्पर्य है, व्यक्ति की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक राजनीतिक एवं शैक्षिक क्षमताओं एवं सम्बन्धों का विकास।

(ii) पाठ्यक्रमः–

हमारा सुझाव है कि भारतीय शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पाठ्यक्रम तीन भागों मे विभक्त होना चाहिए। (1) दार्शनिक सांस्कृतिक पाठ्यक्रम (2) वैज्ञानिक पाठ्यक्रम (3) तकनीकी एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम

(iii) शिक्षण विधिः–

भारतीय शिक्षाविदों को इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि इन तत्वों को प्रचलित व्याख्यान या प्रवचन विधि (LECTURE METHOD) में प्रभावी प्रयोग किस प्रकार किया जाय? वैसे ये सब तत्व वैदिक कालीन चतुष्पद शिक्षण विधि जिज्ञासा, श्रवण, मनन, निदिध्यासन में पहले से ही विद्यमान है। गीता में मनन को परिप्रश्न कहा गया है उपनिषदों में चतुष्पद शिक्षण विधि का प्रभावी प्रयोग हुआ है। भारतीय शिक्षाविदों को पाश्चात्य शिक्षण विधियों का अन्धानुकरण न करके वैदिक, शिक्षण विधि की उपादेयता पर पुनर्विचार करना चाहिये।

(iv) गुरू शिष्य सम्बन्धः–

यह सत्य है कि अब भारतीय समाज में दिव्यगुरू का स्थान पहले जैसा नही रहा है और वह उसकी आलोचना का बाद विषय बन गया है। किन्तु समाज को यह सोचना चाहिये कि वह उपेक्षित अपमानित एवं असन्तुष्ट गुरू से अपनी सन्तानों का निर्माण किस प्रकार करा सकेगा। समाज को चाहिये कि वह आलोचना के बजाय मानव निर्माता गुरूजनों की समस्याओं को समझे और उनका समाधान करें। समाज के बच्चों की शिक्षा का दायित्व वहन करने वाले गुरू को समाज का सम्मान व सहयोग मिलना ही चाहिए।

(8) निष्कर्षः–

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर भारतीयकरण की दृष्टि से इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि शिक्षा प्रणाली के अन्य पक्षो की तरह परीक्षा प्रणाली आदि पक्ष भी सर्व मान्य जीवन मूल्यों की उपेक्षा न करें। सर्वमान्य जीवन मूल्य शिक्षा और उसके समस्त पक्षों के लिए मुख्य आधार माने जाये और शिक्षा का प्रत्येक पक्ष उन मूल्यों पर आधारित हो जो मानव जीवन के सर्वांगीण विकास

से सम्बन्धित हो। कालिदास की मूल्य शिक्षा मात्र सच्ची शिक्षा ही नहीं अपितु शिक्षा के भारतीयकरण का एक मात्र सर्वोत्तम राजपथ भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. एस0पी0 चौबे, इलाहाबाद 1959, ''भारतीय शिक्षा का इतिहास'' रामनारायण लाल प्रकाशन–

2. वाचस्पति गैरोला, इलाहाबाद 1966,''भारतीय दर्शन'' लोक भारतीय प्रकाशन–

3. डा0 ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ''कालीदास ग्रन्थावली'' चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।

4. डा0 उमाशंकर शर्मा (ऋषि) ''संस्कृत साहित्य का इतिहास'' प्रकाशन चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी 1971

5. डा0 कृष्ण कुमार, ''वैदिक साहित्य का इतिहास'' 1961